3952LX

पाठ – 9

दू ठन नान्हे कहानी

मूल लेखक – डॉ.पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
रूपांतर – लेखक मंडल

दू ठन नान्हे कहानी के भाव ल लेखक डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी ह छत्तीसगढ़ी म अनुवाद करे हवय। हीरा अऊ ओस के बूंद कहानी म बताय गेहे। सुंदरई म त्याग के भावना घलो होना चाही जेन अपन सुंदरई के घमंड करथे वोहा पथरा बरोबर कहे जाथे। वोहा ककरो काम नई आवय। कभू–कभू छोटे से जिनिस घलो ह बड़ काम आथे जेकर हिरदे म दया–मया के अमरित भरे रहिथे वोही ह सुघ्घर होथे। 'महतारी के रतन' कहानी म बताय गेहे कि हर संतान ह अपन महतारी, बाप के रतन बरोबर होथे। फेर लइका मन नई समझ सकय अऊ जौन दिन समझ जाथें वो दिन जिनगी बदल जाथे।

हीरा अउ ओस के बूँद

हीरा ह जतका सुग्घर होथे ओतके महँगा घलो होथे। अइसने सुग्घर अउ महँगा हीरा ल जंगल म परे–परे गजब दिन बीत गे । ओकर उपर कोनो मनखे के नजर नइ परिस, काबर के ओ हीरा के चारों–खुँट म काँदी जाम गे रहय। काँदी के एक ठन पत्ता ह ओकर उपर ओरमे रहय। काँदी के पत्ता म परे ओस के बूँद ह बड़ नीक लागत रहय। जब हवा म काँदी ह हाले,तब ओस के बूँद ह मोती कस चमके लागय। अइसे लागे जइसे हीरा–मोती दूनो ह एके जघा सकला गे हवँय। ये झाँकी ल देख के एक ठन बड़े जन झिंगुरा ह हीरा ल कहिथे–''हे महराज ! मोर असन छोटे जीव के उपर तुँहर किरपा बने रहय।'' अपन ल 'महराज' कहत सुन के हीरा ह घमंड म फुलगे। झिंगुरा ह फेर कहिथे–'महराज',काँदी के उपर चमकइया जिनिस ह तुँहर कोनो सगा –सहोदर लागत हे। ये कोन आय ?'' ये बात ल सुन के हीरा के जीव बगिया गे । ओ ह रिस म झिंगुरा ल कहिथे–''तोला मँय बुधमान समझत रेहेंव,फेर तँय तो निचट भोकवा हस । अरे झिंगुरा मोर कुल ह बड़ उँच हावे, अउ ये ओस के बूँद ह तो भिखमंगा आय। एखर पटंतर तँय मोला देखत हवस रे । जा भाग जा, ईंहा ले । दूनों झन भिखमंगा आव।'' हीरा के रिस ल देख के झिंगुरा ह सकपका गे । आधा डर अउ आधा बल करके झिंगुरा ह कहिथे–''महराज ! मोला छिमा करव । तुमन जइसे सुग्घर तइसने यहु ह सुग्घर दिखत हे, एकरे कारन मैं पूछ पारेंव।'' अतका कहिके झिंगुरा ह काँदी म लुका गे ।ओस के बूँद हीरा अउ झिंगुरा के गोठ ल कलेचुप सुनत रहिस हे ।

ओतके समे एक ठन बड़े जन चिरइ ह अगास ले उही तिर टप ले उतरिस। पियास म ओकर टोंटा ह सुखागे रहिस। ओ ह हीरा ल ओस के बूँद समझ के अपन चोंच ल ओकर उपर मारिस,त ओला अपन चोंच ल पखरा म मारे कस लागिस। ओ ह कहिस–''अरे,मैं तो एला ओस के बूँद समझे रेहेंव। ये तो पथरा बरोबर ठाहिल हीरा आय । ये हा मोर पियास का बुझाही ? एकर मोला कोनो जरूरत नइ हे,अब मोला बिगर पानी के मरनच परही।'' हीरा ये बात ल सुनके रिसागे। ओ ह चिरइ ल कहिस–''अरे,चिरइ ! काली के मरइया तैं आजे मर जा। तोर मरे ले दुनिया सुन्ना नइ हो जाय।''

ओस के बूँद ह दूनो के बात ल सुन के विचार करिस के ओकरे जीवन अउ सुघरइ ह धन्य होथे जेन मन पर के खातिर अपन परान ल घलो त्याग देथें। ओस के बूँद ह चिरइ ल कहिथे–''सुन चिरइ भाई, मैं ह ओस के नानकुन बूँद आँव। मोला पिये ले तुँहर परान बाँच जाही त मोर नानकुन जीवन अउ मोती कस सुघरइ ह धन्य हो जाही।'' ओस के बूँद के गोठ ल सुन के चिरइ ह कहिथे–''हाँ,तहीं मोर परान ल बचा सकत हस। तैं धन्य हस। अतका कहिके चिरइ ह ओस के बूँद ल अपन चोंच ले अमर लिस। ओखर टोंटा ह जुड़ाय कस लागिस अउ परान ह बाँच गे। झिंगुरा ह काँदी म सपटे–सपटे ये घटना ल देखिस अउ सोंचिस,के एक के हिरदे ह पथरा बरोबर कठोर हे त दूसर के हिरदे म मया–दया के अमरित भरे हे।

महतारी के रतन

माधो बाबू के घर दुर्गा पूजा बड़ धूम–धाम ले मनाय जाय। माधो बाबू के परिवार वाला मन ये पइँत थोरकिन जादा तियारी करे हावँय। खेल–तमाशा अउ नाचा–पेखन के घलो जोरा करे रहिन हे । महल बरोबर मकान ह बिजली के बत्ती ले जगर–मगर करत रहिस हे। सोन–चाँदी अउ हीरा ले सजे नारी–परानी मन आवत–जात रहँय। बिपिन ह माधो बाबू के परोसी रहय। एकरे सेती वोहु ह पूजा देखे बर आय रहिस। उहाँ सजे – धजे नारी–परानी मन ल देखके ओला अपन महतारी के सुरता आ गे। बाप ल बीते गजब दिन हो गे रहिस हे। बिपिन ल अपन बाप के सुरता घलो नइ ए। बपुरी दाई ह बनी–भुती कर के घर ल चलावत हे। ओहा सोंचथे–इहाँ सोन–चाँदी म लदाय नारी–परानी मन हँसी–ठट्ठा करत किंजरत हवँय,अउ उहाँ बिचारी दाई ह,बनी–भुती म थके–माँदे आके मोर बर भात राँधत होही। कतेक अंतर हे दूनो घर म। बिपिन ह सोंचे–बिचारे के उमर म पहुँचत रहिस। ओकर मन उदास हो गे। माधो बाबू के घर के चकाचौंध म ओखर मन नइ लगिस। ओहा ह घर लहुट गे।

बिपिन के दाई चूल्हा तीर बइठे भात राँधत राहय। गुँगवावत चूल्हा ल कभु निहर के फुँकनी म फुँकत घलो जाय। बिपिन के दाई के नजर बिपिन उपर नइ परिस। आज बिपिन के मन ह घर म घलो नइ लगिस। ओहा उठिस अउ नँदिया कोती निकलगे ।

धीरे–धीरे संझा होये लगिस। सुरुज के पिंवरा किरन ह बादर ल सोन के पानी म पोते कस पिंवरा दिस। बादर ह अइसे लागे,जइसे सोन बगरे हे। बिपिन ह सोंचथे– कहुँ मैं बादर म चढ़े सकतेंव,त बोरा भर सोन सकेल के ला लेतेंव। मोर गरीबिन महतारी ह सुख के दिन ल देख लेतिस। फेर बादर म चढ़ना तो मुसकिल हे। कोजनी

कोन ह अतेक सोन ल बादर म बगरा दे हे । ओतके बेर ओला कोनो मनखे के आरो मिलथे। बिपिन ह लहुट के देखथे,त ओहा अपन पाछू म माधो बाबू ल ठाढ़े पाथे। सगा मन ल जताके माधो बाबू ह थोरिक हवा ले बर नँदिया कोती निकले रहिस हे ।

''कस ग बिपिन ! तैं ह खेल तमाशा देखे बर नइ गे ?'' माधो बाबू ह पूछिस।

''गे रेहेंव,बाबू साहेब ! फेर लहुट के आ गेंव'' बिपिन ह बताइस ।

''काबर ?'' माधो बाबू ह पुछिस।

बिपिन ल लबारी बोले के आदत नइ रहिस। ओ ह अपन मन के सबो हाल ल बता दिस। बिपिन के बात ल सुन के माधो बाबू हँस परिस अउ हँसत–हँसत कहिस–''अरे बिपिन ! तँय फोकट दुखी होवत हस। कोन कहिथे के तोर महतारी ह गरीबिन हे। ओकर तीर तो अइसे रतन हे,जेन मोरो घर म नइ हे।''

''नइ हे ! मैं तो अपन महतारी मेर आज ले कोनो रतन ल नइ देखे हँव।बिपिन ह कहिस।

''बिपिन तोला मोर बात म भरोसा नइ हे,त तैं अपन महतारी ल पूछ लेबे।'' माधो बाबू कहिस। बिपिन ह माधो बाबू के गोठ ल सुनके घर कोती लहुटगे। माधो बाबू के घर के आगू म खेल–तमाशा होवत राहय। भीड़ ह सइमों–सइमों करत रहिस। बिपिन ह सिद्धा अपन घर म खुसर गे ।

''दाई–दाई !''बिपिन ह चिल्लाइस।

''काय बेटा ?''बिपिन के दाई कहिस।

''दाई ! तोर मेर कइसन रतन हे ? महूँ ल देखा तो। माधो बाबू ह कहत रहिस के तोर महतारी तीर जइसन रतन हे,वइसन रतन ओकरो घर म नइये,का ये बात ह सही हे दाई ?''

''हाँ बेटा ! मोर मेर जइसन रतन हे,माधो बाबू के घर म घलो नइ हे।''

''देखा तो,महूँ देखतेंव रतन ल।''

''आ बेटा,मोर तीर आ।''बिपिन के दाई ह बिपिन ल अपन तीर बलाइस।

जब बिपिन ह अपन महतारी तीर पहुँच गे,त ओकर दाई ह ओला काबाभर पोटार के अपन हिरदे ले लगा लिस अउ कहिस–''बेटा, तहीं मोर रतन अस,मोर खजाना अस,दाई–ददा बर संतान ले बड़के कोनो रतन नइ होय। संतान ह दाई–ददा के जिनगी ल रतन बरोबर चमकाथे।'' बिपिन ल पहिली तो बड़ अचरज होइस,फेर पाछू ओहा ये बात ल समझ गे।

बिपिन ह पढ़–लिख के बहुत बड़ साहेब बन गे,फेर तीस बरिस पहिली के घटना ल ओहा आजो सुरता करथे।

शब्दार्थ :– **सुहघर** – सुंदर, **सकलागे** – इकट्ठा हो गया, **भोकवा** – मूर्ख, **बगराना** – फैलाना, **लहुटगे** – लौटना, **मेर** – पास, **आरो** – आहट, **बपुरी**– बेचारी, **नीक** – अच्छा, **काबाभर** – बाहों की परिधि में, **निचट** – एकदम, **ठाहिल** –ठोस, **सिद्धा** – सीधा।

अभ्यास

पाठ से

1. हीरा उपर कोनो मनखे के नजर काबर नई परिस?
2. झिंगुरा ह ओस के बूंद ल हीरा के सगा काबर कहिस?
3. पियासे चिरइ ह का जिनिस ल देखके खाल्हे उतरिस?
4. चिरई ह अपन चोंच ल ओस के बूंद समझ के मारिस त ओला का लगिस?
5. ओस के बूंद ह हीरा अऊ चिरई के बात ल सुनके मन में का विचार करथे?

6. झिंगुरा ह काँदी में सपट के कोन से घटना ल देखिस अऊ का सोचिस?

7. माधो बाबू ल अपन महतारी के काबर सुरता आगे?

8. विपिन ह सुरुज के पिंवरा किरन ल देखके का सोचत रहिस?

पाठ से आगे

1. ''हीरा अउ ओस के बूँद'' कहानी म एक के हिरदे ह पथरा बरोबर कठोर हे त दूसर के हिरदे म मया दया के अमरित भरे हवय अइसन काबर कहे गेहे?

2. महतारी बर लइका रतन से कम नई होवय। तुहर महतारी ह घलो तुमन ल रतन काहत होही। ओ कारण ल पता लगाके लिखव।

भाषा से

1. कहानी में आये वाक्य ''जेकर बुध नई रहय'' वोला एक शब्द म 'भोकवा' कहे जाथे।

अइसने खाल्हे लिखाय वाक्य मन के अर्थवाला एक शब्द लिखव

- जेन कभू सच नई बोलय–
- जेन बनी भूती करथे –
- जेन ह बैपार करथे –
- जेन खेल – तमाशा देखाथे –

2. पाठ म आये समझ, कह, सोच सब्द म ''इया'' प्रत्यय लगाके नवा शब्द बन जाथे–

जैसे – समझ + इया = समझइया

कह + इया = कहइया

सोच + इया = सोचइया

अइसने खाल्हे लिखाय सब्द मन ला ''इया'' प्रत्यय लगाके नवा शब्द बनावव–

सकल, देव, देख, आदि।

3. कहानी म आये ''पियास'' '' घमंड'' शब्द भाववाचक संज्ञा हवय। इन ल विशेषण म बदले ले –

पियास – पियासी = चिरई पियासी है।

घमंड – घमंडी = मनखे, घमंडी हो जाथे।

अइसने खाल्हे दे शब्द मन के विशेषण बनावव

त्याग, लबरा, चमक ।

योग्यता विस्तार

1. 'महतारी के मया' जेन कविता, कहानी, नाटक म बतावय गेहे अइसने कोनो भाव वाले किताब ल पढ़व?

2. डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी के अऊ दूसर कहानी मन ल घलो पढ़व।

●●●